Kodaikanal Road and Akathumuri were surrendered and some adjustments made elsewhere.

(d) There was no decrease in the number of stopping trains, but the volume of traffic has been low.

*475. [*The questioners (Sarvashri Babubhai M. Chinai and K. P. Singh Dev) were absent. For answer* vide *cols.* 38-39 infra]

कपड़ा उद्योग में कर्मचारी

*476. **डा० भाई महावीर :†**

श्री जगदीश प्रसाद माथुर :

श्री ना० कृ० शेजवलकर :

श्री प्रेम मनोहर :

श्री दत्तोपन्त ठेंगड़ी :

श्री लाल आडवाणी :

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव :

क्या विदेश व्यापार मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि कपड़ा उद्योग में 1961 में लगभग 7,58,000 व्यक्ति काम करते थे और 1971 में यह संख्या घटकर 7,34,000 रह गई;

(ख) क्या यह भी सच है कि दस वर्षों की इस अवधि मे कपड़े का उत्पादन 470 करोड़ मीटर से घटकर 350 करोड़ मीटर रह गया है;

(ग) इस गिरावट के क्या कारण हैं; और

(घ) इस सम्बन्ध में क्या कदम उठाये जा रहे हैं और उनका क्या परिणाम निकला ?

‡[EMPLOYEES IN TEXTILE INDUSTRY

*476. DR. BHAI MAHAVIR :

SHRI JAGDISH PRASAD MATHUR :

SHRI N. K. SHEJWALKER :

SHRI PREM MANOHAR :

SHRI D. THENGARI :

SHRI LAL K. ADVANI :

SHRI J P. YADAV :

Will the Minister of FOREIGN TRADE be pleased to state :

(a) whether it is a fact that in 1961 about 7,58,000 persons were employed in the textile industry and in 1971 this number came down to nearly 7,34,000;

(b) whether it is also a fact that during this period of ten years the production of textiles has declined from 470 crore metres to 350 crore metres;

(c) the reasons for this decline; and

(d) the steps that are being taken in this regard and the results thereof ?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF FOREIGN TRADE (SHRI A. C. GEORGE) : (a) to (d) A statement is laid on the Table of the House.

STATEMENT

(a) The daily average of labour on rolls in cotton textile industry (Jan-Oct) 1971 is 9.40 lakhs as compared to 9.18 lakhs in 1961. However, the daily average number of labour actually engaged in the industry during 1971 was 7.16 lakhs as compared to 7.93 lakhs in 1961.

†The question was actually asked on the floor of the House by Dr. Bhai Mahavir.

‡[ ] English translation.

(b) The annual production of cotton cloth in the mill sector in 1961 was 470 crore metres as compared to the estimated production of 395 crore metres in 1971.

(c) The reasons for this decline are :—

(i) Short crop of cotton,

(ii) Closures and

(iii) Financial difficulties of weaker mills.

(d) Efforts to increase production of cotton have been intensified and cotton crop for the season 1971-72 is expected to be higher by 7 lakh bales over the previous cotton season. Cases of closed mills are being reviewed promptly and urgently with a view to taking steps to reopen them, wherever necessary and feasible by taking over under Industries (D & R) Act, 1951.]

†[विदेश व्यापार मंत्रालय में उप मंत्री (श्री ए० सी० जार्ज) : (क) से (घ) एक विवरण सभा पटल पर रखा जाता है। (नीचे देखिए)

विवरण

(क) सूती वस्त्र उद्योग में रजिस्टर पर दर्ज श्रमिकों की दैनिक औसत 1961 में 9.18 लाख की तुलना में 1971 (जनवरी-अक्तूबर) में 9.40 लाख है। परन्तु उद्योग में वास्तव में लगे श्रमिकों की दैनिक औसत संख्या, 1961 में 7.93 लाख की तुलना में 1971 में 7.16 लाख है।

(ख) 1971 में 395 करोड़ मीटर अनुमानित उत्पादन की तुलना में 1961 में मिल क्षेत्र में सूती कपड़े का वार्षिक उत्पादन 470 करोड़ मीटर था।

(ग) इस गिरावट के मुख्य कारण ये हैं :

(1) रुई की कम फसल;

(2) मिलों का बन्द होना; और

(3) कमजोर मिलों की वित्तीय कठिनाइयां।

(घ) रुई का उत्पादन बढ़ाने के लिये प्रयास तीव्र कर दिये गये हैं और 1971-72 के मौसम में रुई की फसल, विगत रुई मौसम की तुलना में 7 लाख गांठें अधिक होने की आशा है। बन्द मिलों के मामलों का तत्परता तथा शीघ्रता से पुनरीक्षण किया जा रहा है ताकि उन्हें पुनः चालू करने के लिये, जहाँ भी आवश्यक या व्यवहार्य हो उद्योग (विकास तथा विनियमन) अधिनियम, 1951 के अन्तर्गत अधिकार में लेकर सरकारी प्रबन्ध के अधीन पुनः चालू करने के लिये, कार्यवाही की जा सके।]

डा० भाई महावीर : श्रीमन्, जो वक्तव्य हमारे सामने रखा गया है इसमें इसके पहले भाग में यह कहा गया है कि 1971 में डेली एवरेज आफ लेबर आन रोल्स 9.40 लाख था जब कि 1961 में 9.18 लाख था और दूसरी तरफ कहा गया है कि डेली एवरेज नम्बर आफ लेबर एक्चुअली इंगेज्ड जो हैं इनके आंकड़े बहुत पहले 1961 में ज्यादा थे और 1971 में कम हैं। तो पहले तो कृपया यह समझाइये कि इन दोनों आंकड़ों में अन्तर क्या है, इन दोनों में फर्क किस तरह से किया गया है।

SHRI A. C. GEORGE : The first set of figures is about the number of workers in total on the rolls of the company. In the Plan outlay in the rural areas there has been a lot of mobility and many of them do not even turn up during the harvest. They may be

†[ ] Hindi translation.

technically on the rolls but physically they may not be present. The second part of the figure is about the actual number of workers for which the concerned statistics are given.

DR. BHAI MAHAVIR : In view of the fact that the per capita availability of cotton cloth is less than what it was in 1955-56 according to the survey and it is also less than what it was in 1961-62, does the Government accept this availability as an index of common man's welfare or not and, if so, is there any effort to analyse the causes of this practically continuous decline for the last 6 or 7 years in the per capita availability of cloth and if any steps are in view to check this unhealthy decline?

SHRI A. C. GEORGE : I am not able to agree with the Member that the per capita availability of cloth is low. The actual situation is apparently it may look that it has gone down but the real position is though the cotton cloth production in the mill sector has come down from 470 crore metres to 395 in 1971, in the decentralised sector it has gone up by 113 crore metres. Put together it will be 735 compared to 707 crore metres in 1961. I may repeat that in the decentralised sector the production in 1961 was 237 crore metres and last year it was 340 crore metres. So added together compared to the 1961 figure of 707 crore metres it is 730 crore metres of availability as the production of manmade fibre cloth has gone up by 62%. The Member may be aware that textile made out of man-made fibre will substitute at one metre to 2 to 5 metres for the equivalent quality in cotton textile.

DR. BHAI MAHAVIR : When you talk of decentralised sector, are you talking of handloom and powerloom or do you include small textile mills spread all over the country which may be on a small scale and secondly, about the figures, does he not accept them as an index of common man's welfare ?

SHRI A. C. GEORGE : I do not accept his premise.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर : अभी आपने डिसेन्ट्रलाइज्ड सेक्टर में प्रोडक्शन बढ़ाने की बात कही है, लेकिन अभी आपकी कांग्रेस पार्लियामेन्ट्री पार्टी के अंदर ही इस बात की चर्चा हुई थी कि पावर लूम और हैन्डलूम इन्डस्ट्री मे बड़ा क्राइसिस है, जो माल तैयार हो गया वह माल मार्केट मे नही जा पा रहा था और वहां के उत्पादकों की हालत बहुत खराब हो रही है । तो क्या सरकार डिसेन्ट्रलाइज्ड सेक्टर और मिल सेक्टर के बीच में डिमार्केशन करने की सोच रही है कि कौन सा माल यहां उत्पाद होगा और कौन वहां उत्पादन होगा और जो क्राइसिस पावर लूम और मिल में पैदा हो गई है, उसके निवारण की दृष्टि से आपकी क्या कोई योजना है ?

SHRI A. C. GEORGE : Already there is a provision earmarking certain items of taxtiles to be produced by mills and those which cannot be produced in the textile mills is earmarked for the decentralised sector.

SHRI JAGDISH PRASAD MATHUR: Why is there a crisis in the powerloom and handloom sector industry ?

SHRI A. C. GEORGE : The crisis is more about availability of yarn than about the disposal of the stock.

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : माननीय मंत्री जी ने जो उत्तर दिया है उससे मैं यह जानना चाहता हूँ कि कितनी मिलें अब तक बन्द हो गई है और उनमें से कितनी मिलों को सरकार ले लेने की स्थिति में आई है तथा इन मिलों को कब तक प्रारम्भ कर दिया जायेगा ? यह प्रश्न

मैं इसलिए पूछना चाहता हूं क्योंकि अभी जो हैन्डलूम और पावरलूम की बात चल रही है और इनका जो कपड़ा होता है वह महंगा होता है। इस कपड़े को पैसे वाले ही खरीद सकते हैं और गरीब के लिए यह कपड़ा सस्ता नहीं पड़ता है। इसलिए जो मिलें बन्द हो गई है, उनकी स्थिति के बारे में मैं आप से जानना चाहता हूँ।

SHRI A. C. GEORGE : At the end of February 1972 there are 670 mills in this country functioning. There are 53 mills which are closed and there are 16 mills which are considered to be fit for scrap only. In respect of the 53 mills that are closed there is a process going on to investigate and if found economically viable to take over. If the hon. Member is interested I will give the details regarding the various stages of investigation and whether it is being taken over.

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : इसके बारे में कब तक इन्वैस्टीगेशन हो जायेगा और उनको चलाने के लिए आप कब तक ले लेंगे ?

SHRI A. C. GEORGE : This may not be the same for all mills. Each case will differ with individual mills.

श्री वीरेन्द्र कुमार सकलेचा : क्या माननीय मंत्री जी यह बतलायेंगे कि टैक्सटाइल्स मिलों की साधारण रूप से यह प्रवृत्ति होती है कि मजदूरों का वर्कलोड बढ़ाया जाय और अधिक काम उनसे लिया जाय। इसके साथ ही साथ टैक्सटाइल मिलों में लेबरों की संख्या कम हो, आजकल मिलों में यह प्रवृति पाई जाती है कि दूसरी तरह की नई मशीनरी मिलों में लगाई जाय ताकि कम लेबर इम्पलाय हो सके। तो मैं सरकार से यह जानना चाहता हूं कि क्या उसकी नोटिस में यह बात आई है कि टैक्सटाइल मिलो मे मज़दूरों के ऊपर वर्कलोड बढ़ाया जा रहा है और नई मशीनरी को लगाकर लेबर को कम किया जा रहा है ?

SHRI A. C. GEORGE : Sir, there are two parts to this question. The first relating to the workload and rationalisation part of it, I have to humbly submit, is being taken care of separately by the Labour Ministry and the Industrial Development Ministry. As far as the Foreign Trade Ministry is concerned we are definitely interested in the modernisation of the mills but at the same time we will not brook workers being thrown out.

श्री बनारसी दास : क्या माननीय मंत्री जी कृपा करके बतलायेंगे टैक्सटाइल इन्डस्ट्री को कोर्स क्लाथ के लिए सबसिडी देने की वजह से पादरलूम का कपड़ा नही बिक रहा है और इसकी वजह से खास तौर पर उत्तर प्रदेश में पूरी हड़ताल हुई और काफी माल वहां पर पड़ा हुआ है ?

SHRI A. C. GEORGE : Sir, the subsidy is given to make the coarse cloth, the common man's cloth, available to him at reasonable prices. That in no way will cut into the benefits and income of the handloom workers.

श्री बनारसी दास : माननीय मंत्री जो ने जो उत्तर दिया है, वह मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं है। मेरा प्रश्न यह है कि टैक्सटाइल मिलों को कोर्स क्लाथ के लिए सबसिडी देने की वजह से इसका कपड़ा पावरलूम के कपड़े से सस्ता पड़ता है और पावरलूम का माल नहीं बिक रहा है। तो मैं सरकार से जानना चाहता हूं कि वह इस सम्बन्ध में क्या कार्यवाही करने जा रही है ?

SHRI A. C. GEORGE : Sir, I am very happy to hear the hon. Member admitting in this House that the coarse cloth is cheap for the common man. At the same time it will be the endeavour of the Government to see that the handloom weavers do not suffer.

SHRI BANARSI DAS : That is not a reply to my question. My specific question was that the policy of the Government in subsidising coarse cloth is detrimental to the handloom and the powerloom industry and the Government's helping the textile mills is having an adverse effect so that the powerloom and handloom industry suffers. Is it the policy of the Government to make them suffer ?

SHRI A. C. GEORGE : When we make coarse cloth available at reduced rates it is in the interests of crores of people in this country and in this process we will definitely see that the handloom weavers are not affected.

SHRI BANARSI DAS : Do you mean to say . . .

MR. CHAIRMAN : Mr. Banarsi Das, the answer has come.

SHRI BALACHANDRA MENON : In view of the intricate designs and colours of the handlooms and in view of the cost of the handlooms being much more than the mill cloth, will the Government see to it that a policy is adopted whereby the handloom is made the main product for higher income groups and the mill cloth made cheaper ? Will such a policy be followed ?

SHRI A. C. GEORGE : It is a completely novel suggestion and I will give my serious consideration to it.

SHRI M. K. MOHTA : Sir, in para 3 (c) of the statement three reasons have been mentioned for the decline in cloth production, but another important reason has not been mentioned, namely, that the textile industry has not been allowed to expand for the last five years. Production cannot grow if the industry is not allowed to expand. Therefore I would like to ask the hon. Minister what is the Government's policy now regarding expansion of the textile industry and the establishment of new textile mills in the country.

SHRI A. C. GEORGE : The hon. Member was definitely referring to a state prevailing earlier, but the latest state is that a scheme for licensing additional spindles to the extent of 2. 5 million spindles during the Fourth Five-Year Plan period has been sanctioned. Under this scheme, spinning mills having less than 25,000 spindles are allowed to go up to 25,000 spindles.

SHRI M. K. MOHTA : I also asked about the establishment of new mills. Will they be allowed?

MR. CHAIRMAN : Will establishment of new mills be allowed?

SHRI A. C. GEORGE : This also will definitely be considered.

MR. CHAIRMAN : Next question.

SHRI LOKANATH MISRA : On the Railways there are suggestion boxes inviting suggestions, and here he is more a suggestion box rather than a Deputy Minister.

SHRI A. G. KULKARNI : Sir, the entire replies to all the questions are not satisfactory. Would you not direct the Minister to give proper replies at least?

SHRI A. C. GEORGE : Sir, some questions are put which are not within the purview of the Foreign Trade Ministry, and normally I will have to accept them as suggestions.

MR. CHAIRMAN : Next question.